प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, माछला मगरा पर एक दिन

गुरुवार सुबह का दृश्य। स्थान- प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, माछला मगरा। कतार में १०-१२ मरीज़ खड़े हैं। कुछ महिलाओं की गोद में छोटे बच्चे हैं तो एक दो महिलाओं की अंगुली थामे नौनिहाल भी कतार का आनंद ले रहे हैं। बैठने के लिए कुछ बेंच लगी हुई हैं, पर एक दो बुजुर्गों के अलावा लगभग सभी खड़े हैं। अन्दर डॉ. प्रेरणा भार्गव तसल्ली से पूरा वक़्त लेते हुए हर एक मरीज़ और बच्चे की जांच कर रही हैं। भवन में दायीं ओर बच्चों का टीकाकरण हो रहा है। वहां वत्सला जी बच्चों को दुलारते हुए टीका लगा रही है और "ममता कार्ड" में उसको दर्ज करते हुए बच्चे के सही खान पान, लालन पालन की बात करते हुए अगले टीके की दिनांक बता रही हैं। साथ ही में नि:शुल्क दवाइयों की दुकान है, जहाँ से बच्चों के लिए विटामिन सीरप सहित अन्य दवाई मिल रही है।

हम मरीजों की कतार ख़त्म होने का इतंजार करते हैं। डॉ. प्रेरणा मुस्कुराती हैं और कहती है कि आप २ बजे तक इंतज़ार कीजिये, अभी तो आपसे बात नहीं हो पाएगी। हम भी सम्मानपूर्वक मुस्कुरा उठते हैं और तब तक अस्पताल का एक दौरा करने की स्वीकृति ले लेते हैं।

वह अस्पताल के एक गैर-तकनीकी साथी को बुलाकर उसे हमारे साथ कर देती हैं। हम एक-एक करके हर कक्ष और सुविधा को देखते हैं। स्वच्छता हमारा मन मोह लेती है।

दोपहर का समय। घड़ी २.०५ बजा रही है। इक्का दुक्का मरीज़ चिकित्सक कक्ष में बैठे हैं और डॉ. प्रेरणा भार्गव उनका रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) जांच रही हैं। मरीजों को एक प्यारी सी मुस्कान के साथ विदा करने के बाद डॉ. प्रेरणा हमसे मुखातिब होती हैं। हम उन्हें नगर निगम द्वारा शहर में चलाये जा रहे "अर्बन95" परियोजना का परिचय देते हैं। वे तपाक से बोल उठती हैं- "सबसे ज्यादा बच्चों को स्थानीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र इकाइयाँ (PHC यूनिट्स) संभालती हैं। आप कुछ ऐसा कीजिये कि जब एक बच्चा अपनी मां या किसी और परिजन के साथ आये तो उसे "अस्पताल" का डर न हो।"

शुरुआत अनजाने में ही डॉ. प्रेरणा कर चुकी थीं तो हम वहीँ से बात आगे बढ़ाते हैं। नगर निगम उदयपुर द्वारा बर्नार्ड वेन लीयर फाउंडेशन, ICLEI साउथ एशिया और इकोरस इंडिया के साथ मिलकर शहर के मोहल्लों और बच्चों से जुड़े स्थानों को और बेहतर बनाने की कार्य योजना पर बात करते हैं। वे बोलती चली जाती हैं, "देखिये, हमारे प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र से १२ आंगनवाडी केंद्र सीधे तौर पर जुड़े हैं। इनके साथ- साथ अगर इस इलाके की बात की जाए तो तकरीबन १८००- २००० बच्चों को कवर करते हैं। इस हिसाब से देखा जाए तो हफ्ते में टीकाकरण, मौसमी बीमारियों सहित दूसरी स्वास्थ्य जांच आदि में १०० से ज्यादा बच्चे यहाँ होते हैं। हमारे स्वास्थ्य केंद्र की सबसे बड़ी खासियत है कि इसके सामने वाले हिस्से में कच्ची बस्ती है, १०० मीटर आगे से अल्प आय वर्ग वालों का मोहल्ला है। केंद्र के दायीं तरफ मध्यम और अल्प आय दोनों रहते हैं जबकि पीछे की ओर उच्च आय वर्ग का संपन्न मोहल्ला है। सीधे शब्दों में कहें तो हम हर एक आय और जाति वर्ग को कवर करते हैं।"

हमारा अगला प्रश्न स्टाफ और सुविधाओं को लेकर था। डॉ. प्रेरणा कहती है, "कोविड -१९ से पहले स्थितियां बहुत विषम थी। ये जो अस्पताल का परिवेश आप देख रहे हैं, ये ऐसा नहीं था। हमने जिला चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के साथ नियमित बात करके केंद्र के पुनरुद्धार के लिए कोशिशें की। उसका नतीजा आप देख रहे हैं। केंद्र में व्यवस्थित शौचालय है, कोरिडोर है और अलग-अलग सुविधाओं के लिए कमरें मौजूद है। बस जगह की कमी है, इसलिए हम बच्चों के लिए ज्यादा सुविधाएं नहीं जोड़ पाए। हम

उन्हें आश्वासन देते हैं कि हम साथ मिलकर बच्चों के लिए इस अस्पताल को और बेहतर बनाने के लिए साथ साथ काम कर सकते हैं। वे खुश हो जाती है।"

क्या यहाँ कुछ सुधारा जा सकता है ? हमारा अगला प्रश्न तैयार था। डॉ. प्रेरणा थोडा सोचती हैं और फिर कहती हैं - "एक तो बाहर ट्रेफिक बहुत ज्यादा है, तो कई बार महिलाओं और बच्चों को अन्दर आने में दिक्कत होती है, दूजे जगह कम होने से कई बार हम उनको ठीक से बिठा नहीं पाते। अगर थोड़ी जगह और हो तो हम सोच सकते हैं। स्टाफ के बैठने के लिए भी जगह नहीं है। पूरे स्टाफ और एएनएम की बैठकें लेने में दिक्कत होती है। वे बताती जाती हैं। कई बार कुछ मरीज़ यहाँ आकर हंगामा करते हैं। सबको इलाज की जल्दी होती है और सबको अपना मरीज़ "इमरजेंसी" में लगता है। ऐसे में दूसरों के हक मारने की कोशिश करते हैं। इनसे निपटना और उनके मरीज का सही इलाज करना, दोनों को संभालना होता है।" वे हल्की सी मुस्कुराती हैं।

वो क्या है, जो आपको अन्य अस्पतालों से अलग बनाता है ? एक और प्रश्न तैयार। वे फिर से हंस पड़ती हैं और कहती हैं, वो तो आपने देख लिया न !! फिर कहती हैं । हमारे यहाँ स्थानीय समुदाय की सहभागिता काफी अच्छी है। बाहर बैठने के लिए बेंच की ज़रूरत हो या पीने के पानी की। समुदाय सब सुविधा उपलब्ध करवा देता है। हमारी आशा बहनें भी बहुत सहयोगात्मक हैं। कभी किसी भी फिल्ड स्टाफ की शिकायत नहीं आई। १००% टीकाकरण है। सर्कार की प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की हर सुविधा यहाँ मौजूद है। हर एक सुविधा तक पहुँचने के लिए बोर्ड लगाये हुए हैं। २ बिस्तर विशेष तौर पर प्राथमिक उपचार और बच्चों की स्वास्थ्य जांच के लिए निर्धारित हैं। साफ़ सफाई में मैं पूरे अंक दूंगी।" हम सहमति जताते हैं।

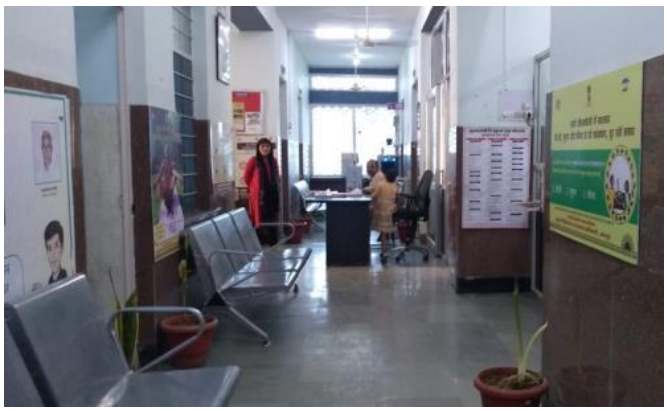

हमारा आखिरी सवाल। हम उनसे उनकी प्रसन्नता की वजह जानना चाहते हैं। वे खुलकर हंसती हैं और कहती हैं, "देखिये, जब से इस अस्पताल में पोस्टिंग हुई, मैंने इसे ही अपना कर्मस्थल बना लिया। चूँकि प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर सबसे ज्यादा गर्भवती- धात्री महिलाएं और बच्चे आते हैं तो उनके लिए अस्पताल को सर्व सुविधाजनक बनाना मेरी प्राथमिकता रही। काफी हद तक हम सफल भी हुए। अब ढांचागत सुविधाओं में भी इस अस्पताल को बेहतर बनाना है तो मैं ज़रूर आपसे मदद लूंगी। मेरी ख़ुशी इन बच्चों से ही है। डॉ. प्रेरणा की प्रेरणा ये बच्चे ही तो है।" बोलते हुए वो गर्व से मुस्कुरा उठती हैं।

डॉ. प्रेरणा की आखिरी पंक्ति हमारे चेहरे पर भी ख़ुशी ले आती है। हम उठने को होते हैं कि वो चाय के लिए मनुहार करती है। घड़ी में ३ बज रहे हैं। हम कहते हैं कि आप सुबह ८ बजे से लगातार मरीज देख रही हैं। चाय फिर कभी पियेंगे। वो उसी ऊर्जा के साथ दोहराती हैं, अजी चाय पीजिये। चाय पर चर्चा करते करते शायद मेरी भी "चाइल्ड फ्रेंडली" ढांचागत विकास पर समझ बन जाये !! हम भी हंस पड़ते हैं।

चलते चलते: प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, माछला मगरा उदयपुर- अहमदाबाद मुख्य सड़क पर स्थित हैं। मुख्य सड़क पर होने और अच्छी चिकित्सकीय सुविधाएं होने से जहाँ सभी लोगों के लिए यहाँ आना सरल हैं, वहीँ मुख्य सड़क के ट्रेफिक के चलते यहाँ खतरे भी कम नहीं। केवल एक चिकित्सक के भरोसे हैं। बाल रोग विशेषज्ञ चिकित्सक साप्ताहिक विजिट्स पर आते हैं। डॉ. प्रेरणा पिछले कुछ सालों से यहाँ मुख्य चिकित्सक एवं प्रबंधक की जिम्मेदारी संभाल रही हैं। "अर्बन95" परियोजना के अंतर्गत निगम इस प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को बच्चों के लिए अधिक सुगम, सहज और सुरक्षित बनाने के उद्देश्य से संभावनाएं तलाश रही हैं। इसी दौरान अस्पताल का दौरा और डॉ. प्रेरणा से मुलाकात हुई।

लेख: ओम, अर्बन 95 द्वितीय चरण, उदयपुर